परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक यहाँ लिखें ।
Candidate should write his/her Roll No. here.

कुल प्रश्नों की संख्या : 8
Total No. of Questions : 8

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 7
No. of Printed Pages : 7

सामान्य हिन्दी एवं व्याकरण
GENERAL HINDI AND GRAMMAR
पाँचवा प्रश्न–पत्र
FIFTH PAPER

समय : 03 घंटे]
Time : 03 Hours]

[पूर्णांक : 200
[Total Marks : 200

प्रश्न : 1. इस प्रश्न में 25 लघुत्तरीय प्रश्न हैं, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 20-25 शब्दों में देना है । सभी प्रश्न अनिवार्य हैं । प्रत्येक प्रश्न 03 (तीन) अंकों का है । (25×03=75)

1) तत्सम शब्द किसे कहते हैं?
2) शब्दार्थ का तात्पर्य क्या हैं?
3) कर्मधारय समास किसे कहते हैं?
4) गुण संधि स्पष्ट कीजिए?
5) अव्यय को परिभाषित कीजिए?
6) समानार्थी शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिए।
7) समास का अर्थ एवं उसके प्रकार बताइए।
8) कारक को परिभाषित कीजिए?
9) व्यंजन संधि किये कहते है?
10) उपसर्ग क्या है?
11) उपपद तत्पुरूष समास किसे कहते है?
12) यमक अलंकार से क्या तात्पर्य हैं?
13) उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण दीजिए।
14) मुख्य आठ विराम चिन्हों का उपयोग कीजिए।
15½ eqgkojksa ls D;k rkRi;Z gSa\

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

16) निम्नलिखित का तद्भव लिखिए –

अंध, कार्य, चर्म, यमुना

17) शब्द युग्म किसे कहते हैं?

18) लोकोक्ति को परिभाषित कीजिए।

19) आँखों में सरसों फूलना, मुहावरे का अर्थ बताइए।

20) काटो तो खून नहीं, मुहावरों का अर्थ बताइए।

21) निम्न के पर्यायवाची लिखिए –

- ऊसर
- कूलकंषा
- तुंग

22) अनुस्मारक पत्र कब लिखा जाता है।

23) विष दे पर विश्वास ना दे, लोकोक्ति को स्पष्ट कीजिए।

24) अनेक शब्दों का एक शब्द दीजिए –

- जिसकी उपमा ना हो
- जो सोचा ना गया हो

25) मुहावरे व लोकोक्ति में अंतर स्पष्ट करें।

प्रश्न 2 – अलंकार (05X01=05)

1) लाटा अनुप्रास अलंकार क्या है, उदाहरण सहित समझाइए?

2) प्रश्न अर्थालंकार से संबंधित है –

2.1) रूपक, यह किस प्रकार का अलंकार है।

2.2) पीपर पात सरस मन डोला, इस पंक्ति में ''डोलना'' शब्द में उपमा का कौन सा अंग है।

2.3) बीती विभावरी जागरी/अम्बर–पनघट में डुबो रही तारा घर ऊषा नागरी, इन पंक्तियों में रूपक का कौन सा भेद है।

2.4) उत्प्रेक्षा के प्रधान भेद कितने हैं?

2.5) हेतु उत्प्रेक्षा अलंकार में, हेतु का सामान्य अर्थ क्या है?

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

प्रश्न : 3. वाक्यों का हिन्दी से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

प्रश्न : 3.1 निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : प्रत्येक प्रश्न 4 (चार) अंकों का है।
(05×04=20)

3.1) भारत की विजय अवश्यंभावी है।

3.2) घोड़ा काफी तेजी से शाम को अपने अस्तबल में चला गया।

3.3) सांसदों ने एक ध्वनि–मत से 8 अगस्त को धारा 370 और 35(अ) को खत्म करने के पक्ष में मत डाला।

3.4) अब आँखे बंद कर लीजिए।

3.5) वहाँ एक ऐसा बच्चा रहता है, जिसकी शरारतों का तुम अंदाजा नहीं लगा सकते।

प्रश्न : 3.2 निम्नलिखित वाक्यों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कीजिए : प्रत्येक प्रश्न 3 (तीन) अंकों का है। (05×03=15)

3.1) । हववक जमंबीमत उंल दवज इम ं हववक ंनजीवत – अपबम अमतें

3.2) ँीम पे जीम विनदकमत व जिींज इतंदकए ें ूमसस ें पजश्े कपतमबजवतण

3.3) जीमतम ंतम उंदल ेंदंजवतपं पद प्दकपं ूीमतम ेपबा चमवचसम हव वित जतमंजउमदजण

3.4) ल्वन बंद ंबीपमअम ेनबबमेए प िलवन ूवता ींतकण

3.5)जीम दवपेम उंमे वनत उपदक तमेजसमेण

प्रश्न : 4. इस प्रश्न में हिन्दी व्याकरण से संबंधित (संधि, समास, विराम चिन्ह इत्यादि) प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 02 (दो) अंकों का है।
(10×02=20)

हिन्दी व्याकरण से संबंधित –

4.1) पति–पत्नी में किस समास का उदाहरण है।

4.2) जितेन्द्रिय में कौन–सा समास है।

4.3) अब्ज का संधि विच्छेद कीजिए।

4.4) दुश्शासन का संधि विच्छेद कीजिए।

4.5) निरोग में कौन–सी संधि है।

for Competitive Exams
(A unit of RACE)

4.6) विज्ञान : वरदान या अभिशाप में कौन से चिन्ह का प्रयोग हुआ है।

4.7) मैं टिकट ले आऊंगा पर, मैं साथ नहीं चलूँगा में कौन–से चिन्ह का प्रयोग किया गया है।

4.8) श्रुतिलीपी का शुद्ध शब्द लिखिए।

4.9) विधवा विलाप करके रोने लगी, का शुद्ध रूप लिखिए।

4.10) निम्न वाक्य में सही चिन्हों का प्रयोग कर दुबारा लिखिए –

''डॉ अशोक जायसवाल एम ए पी एच डी डी लिट् हैं

प्रश्न : 5. इस प्रश्न में प्रारंभिक व्याकरण, शब्दावलियों से संबंधित निम्नलिखित **10** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रत्येक प्रश्न 02 (दो) अंकों का है।** **(10×02=20)**

5) 5.1) 'स्वदेश' का शाब्दिक शब्द अंग्रेजी में लिखे।

5.2) म्दजतमचतमदमनतश का शाब्दिक शब्द हिन्दी में लिखे।

5.3) 'जहर का घूँट' का अर्थ क्या है?

5.4) कृत्रिम का विलोम शब्द लिखिए।

5.5) 'जिसमें चार पद हैं'। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बताइए।

5.6) आशीष का तद्भव रूप बताइए।

5.7) गधा का तत्सम रूप बताइए।

5.8) बै बतवच का हिन्दी अर्थ बताइए।

5.9) सैनिक शासन का शाब्दिक शब्द अंग्रेजी में लिखिए।

5.10) डंदवमनअमतश का शाब्दिक शब्द हिन्दी में लिखिए।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

प्रश्न : 6. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अभ्यर्थी जिस गद्यांश का उत्तर लिख रहे हैं उसका स्पष्ट शीर्षक/क्रमांक का उल्लेख करें। **(05×04=20)**

6) गद्यांश

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह, जो हमें जीवन-यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्रवितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो-माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेनेवाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तो उसका जीवन भी मानव-जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींगविहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्राय: अभावे दिखाई देता है, परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है; सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं, इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव-जीवन का चारु प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

प्रश्न –

(क) व्यक्ति किस परिस्थिति में मानव-जीवन की उपाधि नहीं पा सकता?

(ख) विद्याहीन व्यक्ति की समाज में क्या दशा होती है?

(ग) शिक्षा के क्रमिक सोपान कौन-कौन-से हैं?

(घ) शिक्षित युवकों को अपना बहुमूल्य समय क्यों बर्बाद करना पड़ता है?

(ड) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—

1. संधि-विच्छेद कीजिए-परावलबी, जीविकोपार्जन।

2. विलोम शब्द लिखिए-सार्थक, विकास।

प्रश्न : 7. रेखांकित अथवा दी गई पंक्तियों का पल्लवन अथवा भाव पल्लवन कीजिए : अभ्यर्थी जिस प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं उसका स्पष्ट उल्लेख उत्तर के प्रारंभ में अनिवार्यत: करें । प्रश्न 10 (दस) अंकों का है । (01×10=10)

7½ iYyou vFkok Hkko iYyou dhft, &

- /kj dk tksxh tksxMk] vku xkWao dk fl)A

vFkok

- आंख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव धरती पर टिके हो।

प्रश्न : 8. किसी एक गद्यांश का एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए : अभ्यर्थी जिस गद्यांश का संक्षेपण कर रहे हैं उसका स्पष्ट उल्लेख उत्तर के प्रारंभ में अनिवार्यत: करें । प्रश्न 10 (दस) अंकों का है । (01×10=10)

वसन्तऋतु की शोभा

वसन्तऋतु के आते ही शीत की कठोरता जाती रही। पश्चिम के पवन ने वृक्षों के जीर्ण-शीर्ण पत्ते गिरा दिये। वृक्षों और लताओं में नये पत्ते और रंग-बिरंगे फूल निकल आये। उनकी सुगन्धि से दिशाएँ गमक उठीं। सुनहले बालों से युक्त गेहूँ के पौधे खेतों में हवा से झूमने लगे। प्राणियों की नस-नस में उमंग की नयी चेतना छा गयी। आम की मंजरियों से सुगन्ध आने लगी; कोयल कूकने लगी; फूलों पर भौरें मँडराने लगे और कलियाँ खिलने लगी। प्रकृति में सर्वत्र नवजीवन का संचार हो उठा। टिप्पणी- ऊपर मूल सन्दर्भ में वसन्तऋतु प्रकृति की शोभा का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन हुआ है, जिसमें साहित्यिक लालित्य भरने की चेष्टा की गयी है। संक्षेपण में हमने सभी व्यर्थ शब्दों और वाक्यों को हटा दिया है और काम की बातों का उल्लेख कर दिया है, सीधी-सादी भाषा में। मूल वर्तमानकाल में लिखा गया है, पर संक्षेपण में सारी बातें भूतकाल में लिखी गयी हैं।

vFkok

तत्परता हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति है। इसके द्वारा विश्वसनीयता प्राप्त होती है। वे लोग जो सदैव जागरूक रहते हैं, तत्काल कर्मरत हो जाते हैं और जो समय के पाबन्द हैं, वे सर्वत्र विश्वास के पात्र समझे जाते हैं। वे मालिक जो स्वयं कार्यतत्पर होते हैं, अपने कर्मचारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं और काम की उपेक्षा करने वालों के लिए अंकुश का काम करते हैं। वे अनुशासन का साधन भी बनते हैं। इस प्रकार अपनी उपयोगिता और सफलता में अभिवृद्धि करने के साथ-साथ वे दूसरों की उपयोगिता और सफलता के भी साधन बनते हैं। एक आलसी व्यक्ति हमेशा ही अपने कार्य को भविष्य के लिए स्थगित करता जाता है, वह समय से पिछड़ता जाता है और इस प्रकार अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी विक्षोभ का कारण बनता है। उसकी सेवाओं का कोई आर्थिक मूल्य नहीं समझा जाता है। कार्य के प्रति उत्साह और उसे शीघ्रता से संपन्न करना। कार्य-तत्परता कैं दो प्रमुख उपादान है जो समृद्धि की प्राप्ति में उपयोगी बनते हैं।